भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

20/01/2015

देश को बेचने के लिए रखकर सार्वभौमिकता की झांकियाँ दिखाने वाले गणतंत्र दिवस का बहिष्कार करो!
दुनिया की जनता का अव्वल नंबर दुश्मन अमेरिकी साम्राज्यवाद का सरगना बराक ओबामा के भारत आगमन के विरोध में
26 जनवरी 2015, को 'भारत बंद' सफल बनाओ!

विगत 65 सालों से 26 जनवरी को भारत के शासक वर्ग 'गणतंत्र दिवस' तथा 15 अगस्त को 'स्वतन्त्रता दिवस' के रूप में मनाते आ रहे है। असल में यह दोनों अवसर भारत के शासक वर्ग का छल है। भारत के संविधान में दिये गए प्राथमिक हक एवं अतिरिक्त रूप से बताए गए निर्देशित सिद्धांत कितने खोखला है, यह आजादी बाद के इतिहास देखने से आसानी से समझ जाएंगे। भारत का जनवाद बड़ा और अमेरिका का जनवाद लंबे समय से है, ऐसा बोलना सिर्फ बकवास है। ऐसा होने के बावजूद इन समारोहों को लूटेरे शासक वर्ग एवं सरकारे बड़े उत्साह के साथ मनाते है। 26 जनवरी 2015 के 'गणतंत्र दिवस' समारोह में दुनिया के जनता का बड़ा दुश्मन अमेरिका साम्राज्यवाद का सरगना के भारत आने के खिलाफ एक स्वर से विरोध करते हुए गणतंत्र दिवस समारोह का बहिष्कार करने के लिए हमारी पार्टी देशवासियों को आवाहन कर रही है। हमारी पार्टी की केंद्रीय कमेटी जनता से यह भी अपील करती है कि 26 जनवरी, 'भारत बंद' को सफल बनाए।

हमारा प्यारा भारत देश का भंडार है। देश के प्राकृतिक संसाधन और मानव संसाधन जिसका विगत में ब्रिटिश साम्राज्यवादीयों द्वारा मनमाने ढ़ंग से लूटा गया और अब तमाम साम्राज्यवादी देश विशेष रूप से अमेरिका साम्राज्यवाद द्वारा लूटा जा रहा है। ब्रिटन के उपनिवेश के बाद 1947 के आजादी से हमारा देश साम्राज्यवादीयों के अप्रत्यक्ष शासन, नियंत्रण व लूट का शिकार होते हुए अब अर्ध-उपनिवेश मे बदल गया है। दुनिया के ऊपर आधिपत्य जमाने के इरादे से अमेरिका कई देशो में युद्धोन्मादी कार्रवाईयों को बढ़ावा देना और पश्चिम आशिया को न बुझने वाले आग में ढ़केल देना एवं इराक और अफगाणिस्तान पर प्रत्यक्ष रूप से युद्ध कर लाखों लोगों की हत्या की गई। अनेक देशों पर पाबंदीयां लादकर जनता को अनगिनत कठिनाईयों का शिकार बनाने वाले युद्धपिपासू अमेरिका अध्यक्ष को देश में आने के निमंत्रण का पुरजोर विरोध करते हुए हमें यह ऐलान करना है कि दुनिया के जतना का नंबर एक दुश्मन को देश के गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल होने का नैतिक अधिकार भी नहीं है।

16 वीं लोकसभा में जीतकर सत्ता की बागडोर संभाले मोदी ने पिछले 8 महिनों से 'मेक इन इंडिया' और 'जनधन' जैसे नारों की हवा बनाकर जनता को बरगला रहा है। पिछले प्रधानमंत्रीयों को पीछे छोड कर प्रधानमंत्री मोदी ने अपने इन 8 महिनों के शासन काल में 1 महिना विदेशों में बिताकर देश को बेचने के लिए बाजार निर्माण कर लौटे है। विदेशी पूँजी, निजी पूँजी से देश के विकास की राह बनाने की बातों से जनता को सीधे-सीधे उल्लू बना रहा है। हमारे देश के अपार प्राकृतिक संसाधनों, मानव संसाधनों को जिस में मुख्य रूप से युवा शक्ति की लूट करने के लिए साम्राज्यवादीयों के रास्तों को और चौडा किया जा रहा है। 'जनधन' योजना मात्र करोडों जनता के अल्पबचत को शोषक वर्गा के हवाले करने की एक बड़ी साजिश है। मोदी के मुँह से निकली हर बात, हर काम पूँजीपतियों के हीतों को ध्यान में रखकर ही हो रही है। पिछले कुछ सालों से गंभीर वित्तीय संकट में डुबे

साम्राज्यवादी देशों से मोदी द्वारा किए जा रहे तमाम रणनीतिक करारें खुले तौर पर देश को बेचने के सिवा और कुछ नहीं और यह समझने के लिए 'गुजरात वायब्रेंट' एक ताजा व अच्छा उदाहरण है। 21 लाख करोड की पूँजी देश के उद्धार के लिए आ रही कहकर देश की जनता को गुमराह किया जा रहा है। संसदिय जनवाद में मतदान करने से जनता की भूमिका का अंत होता है जिसका आगे चलकर गणतंत्र का मतलब तानाशाही ही होता है। यह समझने के लिए पिछले 65 सालों के संसदीय इतिहास काफी है। आज तमाम जनता को देश के प्रधानमंत्री मोदी के हर नीति का खण्डन करते हुए साम्राज्यवाद एवं दलाल नौकरशाह पूँजीपतियों के पूँजी को देश में जगह नहीं है कहते हुए जनसंघर्ष करने की आवशक्ता पहले से कही अधिक निर्माण हो गई है। 15 अगस्त को 'स्वतन्त्रता दिवस' के मौके पर मोदी द्वारा दिए गए संदेश ''मैं देश का प्रधानमंत्री नहीं, प्रधानसेवक हुँ'' यह कहना असल में उसके साम्राज्यवादीयों के प्रति अपनी निष्ठा को ही दर्शाती है। चीन, जापान, ब्रिटन, रूस इत्यादी देशों के नेतागणों के बाद अब गिद्ध अमेरिकी अध्यक्ष ओबामा के आगमन की मोदी द्वारा की जा रही आवभगत का विरोध करते हुए साम्राज्यवादी पूँजी के बलि चढ़ने से हमारे देश को हम बचाएंगे।

केंद्र में भारतीय जनता पार्टी सत्ता में आने से पहले और आने के बाद देश की राजनीति में आर.एस.एस. की भूमिका अभूतपुर्व ढ़ंग से बढ़ी है। आर.एस.एस. के सरसंघचालक मोहन भागवत, भाजपा के अध्यक्ष अमित शाह और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इनकी तिकड़ी देश में धर्मोन्मादी कार्रवाईयों को और हवा दे रही है। इस पार्टी के कई नेतागण संसद में ही धर्मोन्मादी बयान देकर देश की जनता में भय एवं असुरक्षा की भावना निर्माण कर रहे है। अल्पसंख्यकों पर हमलों में इजाफा हो रहा है, धारा 370 रद्द करने की साजिशें चल रही है। हिंदु धर्म, हिंदु राष्ट्रीयता, अखंड भारत जैसे दक्षिणपंथी प्रतिक्रियावादी विचारधारा फैलाने के लिए किए जा रही कोशिशों को देखने से यहूदीयों के कत्ल किए हिटलर के भाषणों एवं उठाये कदमों की याद दिलाती है। युरोप व अमेरिका मे नस्लवादी हमलें तेज हुए है। ओबामा का रंग ही काला है वहाँ पर वह सत्ता में रहने के बावजूद भी हर साल सैकडों काले वर्ण के लोगों को हत्या हो रही है। अश्वेत पीडित जनता गिद्ध जनवादी में न्याय से वंचित हो रहे है। दुनिया के कैदियों में से 20 प्रतिशत कैदी मात्र अमेरिका में ही है और उसमें भी अश्वेतों की संख्या काफी अधिक होना अमेरिका के नस्लीय भेदभाव तथा दमन को दर्शाती है। इधर हमारे देश में भी धर्म के नाम पर हो रहे नरसंहारों के खिलाफ विगत में किए गये जन प्रतिरोध को और हिम्मत तथा व्यापक रूप से तीव्र करने की जरूरत आज ज्यादा है।

प्यारे देशवासियों,

मोदी सत्ता मे आने के बाद देश की जनता पर चौतरफा हमलों में इजाफा हुआ है। उस को सत्ता में बिठाए अदानी, अंबानी, टाटा, एस्सार, जिंदल जैसे दलाल नौकरशाही पूँजीपतियों तथा साम्राज्यवादीयों के हीतों की रक्षा के लिए 'श्रमे व जयते' कहकर मजदूरों के हकों और जिंदगीयों पर वार कर रहा है। भूमि अधिग्रहण कानूनों में कल के यु.पी.ए. सरकार को पछाडकर नये संशोधन कर किसानो की जमीनों को, विशाल वन क्षेत्रों को पूँजीपतियों के डालरों के सामने विक्री के लिए रखे है। पेसा कानून के द्वारा ग्रामसभाओं को रूप में मिले आदिवासियों के अधिकारों को कुचलनें के लिए माओवादीयों का बहाना बनाकर षड्यंत्र रचा जा रहा है। सुशासन के नाम पर 'कम शासन ज्यादा प्रशासन चलाने के लिए जन कल्याणकारी कामों से हाथ निकाल जनता की जिंदगीयों को बाजार में ढ़केल दिये है। रक्षा, बीमा, रेल्वे और कई क्षेत्रों को पूर्ण निजीकरण के तरफ ले जा रहा है। एक तरफ तो आधारभूत ढ़ाचा निर्माण के नाम पर देश के संसाधनों का दोहन करने के गंभीर प्रयास जारी है। तो दूसरी तरफ माओवादी क्रांतिकारी आंदोलना को नेस्तनाबूत करने के लिए पिछले पांच सालों से जारी 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' को वर्तमान सरकार और तीव्र कर तीसरे चरण में ले गई है। इनके कदमों के पीछे, फैसलों के पीछे, कानूनों के संशोधनों के पीछे साम्राज्यवादीयों का संपूर्ण समर्थन है। यह सब उनके देखरेख में ही चल रहा है, जिसका हम सभी को दृढ़ता के साथ विरोध करना है। हमारे देश ने भोपाल गॅस काण्ड का कटु अनुभव झेला है। परंतु ऐसा होने के बावजूद कई न्युक्लियर रिएक्टर के समझौते हुए है। इस प्रकार देश के सभी क्षेत्रों में हो रहे बदलावों से जनता को और गहरे खाई में ढ़केला जा रहा है। देश की सार्वभौमिकता का जैसे कोई मतलब ही नहीं बचा हो! इसलिए हम सभी को मिलकर

जनता की सही आजादी, स्वेच्छा, समानता, जनवाद और सही सार्वभौमिकता के लिए, स्वावलंबन की दिशा में अलग-अलग राष्ट्रीयताओं का एक जन गणतंत्र से बनने वाले भारत संघ का निर्माण करने के लिए लड़ना है। भारतवासीयों से हमारी पार्टी यह अपील कर रही है कि इस झूठी आजादी एवं गणतंत्र का बहिष्कार करते हुए साम्राज्यवाद की सेवा में लगे शोषक वर्गों को हराकर नवजनवादी भारत को संघर्षों द्वारा निर्माण करेंगे।

- **दुनिया की जनता का अव्वल दुश्मन ओबामा वापस जाओ!**
- **साम्राज्यवाद का प्रधान सेवक मोदी और उत्पीडित जनता एवं देशों का अव्वल दुश्मन साम्राज्यवाद का सरगना ओबामा का पुतलों को जलाओ!**
- **झुठे गणतंत्र का बहिष्कार करो!**
- **जनता के जनवाद के लिए संघर्ष करो!**

Abhay

(अभय)

प्रवक्ता, केंद्रीय कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

नोटः आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं बंद से मुक्त है।